आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 6/अंक 1/मार्च 2026

Received: 13/03/2026; Revised: 18/3//2026; Accepted: 24/03/2026; Published: 28/03/2026

इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की हिंदी कविता

डॉ . रंजना पाटिल
प्राचार्य
अक्कमहादेवी महिला महाविद्यालय बीदर

डॉ . रंजना पाटिल, इक्कीसवी सदी के प्रथम दशक की हिंदी कविता, आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 6/अंक1/मार्च 2026**,(115 -119)

https://doi.org/10.5281/zenodo.19500412

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

प्रस्तावना :-तेज गतियों से बदलता हुए समाज में पहले कभी इतनी अधिक रंग बिरंगी और प्रतिक्षण बदलती इमेज से नहीं घिरी रही | इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने चारों ओर बिम्बों का एक मेला सा रचा दिया है | बिम्बों की इस अतिशयता ने हमारे देखने, सोचने, समझने और हमारे पुरे व्यवहार को वैसा नहीं रहने दिया है जैसा वह दो-ढाई दशक पहले था | २० सदी के अंतिम दशक में राजनीतक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मंच पर जो विराट परिवर्तन घटे है | जिन्होंने समूचे मानव-जीवन और पर्यावरण को प्रभावित किया है, और इनके स्थूल और सूक्ष्म परिणाम अज इक्कीसवी सदी के पहले दशक में और भी स्पष्ट रूप से हमारी सामने आए है |

विषय विवरण :- गोल्डमान का विचार था की बाजार का अर्थशास्त्र मनुष्य को वयक्तिक एक स्वतंत्र इकाई बनाते हुए कविता को एक ऐसी एकल आवाज बना देगा जो आन्तरिक रूप से थकन और बाहरी रूप से क्षरण की शिकार होगी | और अंतत: उसकी मृत्यु हो जाएगी |

संचार माध्यमो और आवाज से निर्मित बिम्ब कविता के बिम्ब का विपर्यय है | मुझे लगता है शायद इसीलिए इक्कीसवी सदी की कविता बिम्ब बनाने से बचने की कविता है | अपनी ही जीवनभर की पूंजी से कतराने की कविता | कंप्यूटर ग्राफिक्स वास्तविकता से प्रतिस्थापित कर रहा है | कविता की दुनिया में यदि आज नये किस्म के तनाव दिखाई दे रहे हैं, वस्तुजगत, अनुभवजगत

और अभिव्यक्ति के नये रूप के आकारों को खोजने की बेचैनी है तो उसे इसी सन्दर्भ में समझा जा सकता है |

एक रचनाकार के लिए सामाजिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर इक्कीसवी सदी का यह वस्तुजगत इतना जटिल है, उसके इतने सारी पर्ते और पहलु हैं की आज लिखी जा रही कविता को कोई मोटीसी विषय सूचि बनाना कतई असम्भव है |

कविता चूंकी मनुष्य का अपने आत्मजगत से साक्षात्कार है, इसलिए वह ताकत की संस्कृति द्वारा आरोपित –चीजों के एकल अर्थ के विरुध्द मानवीय गतिविधियों के संसार में अर्थों की जीवन्तता और बहुलता बचाना चाहती है | कवी आज जब अर्थों के जनतंत्र को बचाने की बात करता है वह सिर्फ भाषा का संकट नही, मानवीय अस्तित्व की मूल गरिमा का संकट है |

कवि रघुवीर साहाय ने कभी ये मार्मिक पंक्तियाँ लिखी थी –

एक और ही युग होगा
जिसमें ताकत ही ताकत होगी
और चीख न होगी |

इक्किसवी सदी में बाजारोन्मुख सूचना जगत और कविता के बीच कुछ नये तरह के अंतराल बन रहे है | सूचना जगत में हर मानवीय विपदा हर अमानुषिकता, हर त्रासदी अनतत: एक खबर है, एक वृतान्त है, ये मसला है, सबसे बुरी और भयावह घटना में भी सनसनी के उप –उत्पाद या 'बाइ – प्रोडक्ट' को 'क्रियेट' कर उसकी मार्केटिंग की जाती है |

एक आरोपित समग्रता के बिच मनुष्य मन दबे –ढके कोनों में अंतरालों में छिपे राग को रचना चाहती है –कवी एकांत श्रीवास्तव अपनी एक ताजा कविता में लिखते है –

रात की बारिश में भीगी हुई भूमि पर ही
उतरता है नए दिन का प्रकाश
फिर लगता है पेड़ों को देखो
और भूल जाओ अपनी थकान
पहाड़ों को देखो और भूल जाओ अपनी उदासी
भोर के आकाश में सफेद पड़ते चाँद को देखो
और किसी को याद करो
परिंदों की पहली उड़न को देखो
फिर किसी यात्रा पर निकल पड़ो
(बारिश में आखिरी बस)

आज इस समकालीन अनुभूति कि अलग-अलग शेड्स है |

इक्कीसवी सदी की रचनात्मक चुनौतियाँ विकट है | मनुष्य के भौतिक और आत्मिक विस्थापन के विरुध्द खड़ी समकालीन कविता के अलग-अलग अनुभव क्षेत्र बनकर तेवर और अभिव्यक्ति रूप उभर रहे है | इनमें जहाँ हमारे बनते बिघडते इतिहास की घेराबंदी का निर्मम अंकन है वहीँ वह मनुष्य के भीतर की शाश्वत जिजीविषा, राग, स्मृति, आकांक्षा और न्यायकामना का संघर्ष-स्वप्न भी

है | वरिष्ठ कवियों से लेकर नितान्त युवा कवियों तक की रचनाओ में यह समय के एक सासों की नयी सम्भावनाओं से भरी यात्रा है |

<u>इक्कीसवी शताब्दी की हिंदी कविता में समाज और संवेदना :-</u>

इक्कीसवी शताब्दी अभी मात्र नो वर्षो की बालिका है |अत: उसके समय, समाज और साहित्यिक गतिविधियों नई परंम्पराओं के सूत्रपात तथा विकास की संभावनाओं पर विचार करना ज्योतिषी की तरह सदी के जन्म के गृह नक्षत्र को देखकर उसकी कुंडली बनाना तथा उसके भविष्य के बारे में वक्तव्य देने जैसा है | समय की गति पहले की तुलना में अधिक तीव्र है, इसलिए अब तो सदी की संपूर्ण गतिमयता दशक में ही निहित हो जातो है |

इक्कीसवी सदी की कविता में जो लोक समाज उभरता है वह तन्त्र के शोषण और षड्यंत्र से व्यक्ति है | जीवन की आवश्यक जरूरतों से वंचित और पशु-तुल्य जीवन जीने के लिए विवश है| कविता समाज को जागृत करना चाहती है वह उसके उस मिथक को तोड़ना चाहती है | जिससे वह मानती है कि उसकी गरीबी और आभाव ईश्वर प्रदत्त है, उसमेंआदमी की कोई भी भूमिका नहीं है |

इक्कीसवी सदी के नोवजवान कवी ऐसी भाषा और ऐसी खुली रायव्यक्त करने में हिचक कर सकते हैं

वे हत्यारे ही नहीं
चोर उचक्के डकैत
होमोसेक्सुअल मैट्रोसेक्सुअल
रेपिस्ट है
उनके जीवन में पश्चाताप का
एक क्षण नहीं आया
और वे सब-के-सब राजनीति में है |
क्या हम गिरे हुओं से
अपनी तुलना कर स्वयं को उठा हुआ
करार देंगे
मैं बोनों के कन्धे पर चढ़कर महँ नहीं होना चाहता |
राजा चुपके से काटता है चक्कर रैट में
नये नये शेष में अलग अलग घात में
जो सोये उनके माथे से तकिया खींचता |
फेंकता खलिहान में लुकाठी
मसोमात के खेत से मुली उखाड़ता
खोलता बदरू की पाठी
गुद्दा गटक फेंकता आँगनों में आंठी |

जिस राजशाही की खिलाफत करके मिली लोकशाही उसी लोक का शाह अर्थात राजा से ही जनजीवन असुरक्षित तथा तबाह हो रहा है |

धीरे-धीरे गाली-गलौज, तीखे-चुटीले व्यंग्य सब कुण्ठित हो जाते हैं | यहाँ तक की आतंकी भाषा भी निस्तेज हो जाती है | कवी सन्वेदनशील होता है, वह शब्दों को ही ब्रम्हास्त्र की तरह अमोघ बनाकर राजनीति पर

वर करता है | कवि श्यामसुन्दर घोष ने जंगली जीवों को राजधानी में घुसाकर 'हाँका' बोल दिया है | साक्षात्कार के मार्च २००९ के अंक में एक लंम्बी कविता प्रकाशित है | जानवरों का कहना है कि-

अब तो आदमी हो गए है जानवर

और शहर हो गए है जंगल और राजधानी महाजंगल
तभी तो हमें निर्णय लिया की
हम हाँका लगायेंगे शहरों और राजधानियों में

हाँका सुनकर हाकिम, हुक्काम, नेता, विधायक, मंत्री, बिचौलिये दलाल सभी के चेहरों से हवाइयाँ उड रही है | उनकी बीबियों के चेहरों के उड़ गए है | हाँका लगाने वाले जानवर कह रहे है हमें तुम्हारी सुख सुविधा के सामान नहीं चाहिए तुम्हारे बंगले, कोठियों और फल्याटो में हम बसने भी नहीं आए हैं | अत्याचार के खिलाफ जब मनुष्य हरता है तो संपूर्ण प्रकृति-शक्ति अत्याचारियों के समूल नाश के लिए आगे आ जाती है | कवी मिथकों का नये सन्दर्भ में प्रयोग करते हुए कहता है –

हम तो इतिहास में सिर्फ यहाँ दर्ज करने ए है की जब-जब मनुष्य भ्रष्ट,लालची और निकम्मा होता है तब-तब हम दुदुन्भी बजाते हुए उद्घोष करते हुए आते है –

सम्भवामि युगे-युगे |
हम है वराह
हम है नरसिंह
हम है वामन
हम है परशुराम
और हमी है कल्कि
तुम हमारी सत्ता को भूल ण जाओ
इसलिए हम तुम्हे समूल नष्ट करने आए है |

आज का समय मुख्यता : राजनीती का समय है | २१ वी सदी का शायद ही कोई जागरूक कवी गणतंत्र के बारे मे कुछ न कुछ लिखता हो |

वयोवृद्ध कवी सुरेद्रनाथ नूतन अपनी एक कविता शीर्षक लाशो का सौदागार में सीधे आतंकियों को संबोधित करते है राजनीती की कुटीसत छवि का वही अंत होता है जो नर – भक्षियो का होता है | जिसके के लिए सारा जग धीक्कारता है | अपना घर –परिवार –कौम सभी ज्वाला में जलते है |

कवी कहता है –

सारा जग तुमको धिक्कार कर रहा है
एस जघन्य अपराध के खातिर
सोचो क्या परिवार तुम्हारा
एस ज्वाला से बच पायेगा
कब तक जहर यह बोते जावोगे
तुम जिसमे स्वयम झुलसोगे

इक्कीसवी सदी में जिसमाहौल में कविता लिखी जा रही है वहा मनुष्यता के लिए पर्याप्त चुनौती का समय है| दलित और स्त्रिया अपनी बेहतरीन के लिए परमुखापेक्षिता छोड़कर स्वयम आगे आ रही है | बाजारीकरण के कारण दुनिया की भीन्नताए और विशिष्टताए मिटती जा रही है|

निष्कर्ष :- निष्कर्ष रूप में कह सकते है | आज की काव्य संवेदना को बचाए रखने की है | अपने परिवेश को सुरक्षित रखते हुए जीने और जीने देने के तर्क के साथ उत्पादक , विक्रेता तथा उपभोक्ता से ऊपर बुद्धि , विवेक भावना के साथ एक स्वतन्त्र और समावाष्टि में मनुष्य होने की कामना बीसवी सदी की कविता की केन्द्रीय संवेदना है |

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

१. इक्कीसवी सदी का हिन्दी साहित्य समय ,समाज और संवेदना |
-रविन्द्रनाथ मिश्र

२. इक्कीसवी सदी की कविता : तेज गतियों का समय और बदलता हुआ समाज
- राजेश जोशी

३. इक्कीसवी सदी का समय और कविता का निहितार्थ
- विजयकुमार

४. इक्कीसवी शताब्दी की हिंदी कविता : समय , समाज और संवेदना
- राम किशोर शर्मा

****